तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

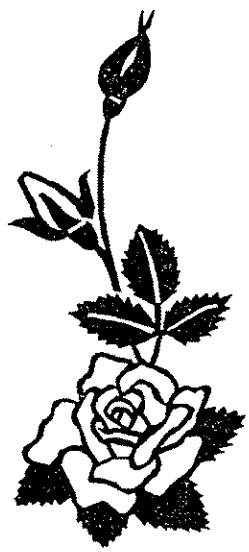

तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि

3.0 प्रस्तावना :-

अनुसंधान कार्य में सही दिशा की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध की व्यवस्थित रूपरेखा ही शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करे, इसमें न्यादर्श का चयन की विशेष भूमिका होती है, क्योंकि न्यादर्श जितने अधिक सुदृढ़ रहेंगे, शोध के परिणाम उतने ही विश्वसनीय और परिशुद्ध होंगे। न्यादर्श के चयन के पश्चात तकनीक एवं उपकरणों का चयन भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी के आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तत्पश्चात् एक उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला जाता है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के इस अध्याय में मुख्यतः न्यादर्श चयन, शोध में प्रयुक्त उपकरण प्रदत्तों का संकलन एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि का वर्णन किया गया है।

– **पी.वी. यंग के अनुसार :-**

"अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिनके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है, तथा उनके उन अनुक्रमों, पारस्परिक सम्बन्धों, कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है, जो कि प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।"

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अनु. जनजाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना है।

3.1 शोध प्रक्रिया :-

अवस्था–1 : सर्वप्रथम संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया जो कि शोध के लिए एक महत्वपूर्ण पक्ष है। उसके बाद समस्या का चयन मार्गदर्शक के साथ बातचीत करके किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए न्यादर्श का चयन यादच्छिक विधि से किया गया है। इसके लिए गुजरात राज्य के दाहोद जिले के फतेपुरा ब्लाक के विद्यालयों में से ऐसे छात्र छात्राओं का चयन किया जो अनु. जनजाति के हों और कक्षा सातवीं में अध्ययनरत हों। प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रदत्तों के संकलन हेतु अनु. जनजाति के बच्चों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करने के लिये डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

अवस्था–2 : प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्तों का संकलन करने के लिए गुजरात राज्य के दाहोद जिले के फतेपुरा ब्लाक की शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा सातवीं के अनु. जनजाति के बच्चें का चयन किया गया।

शोधकर्ता ने प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में अलग अलग निर्धारित तिथि, स्थान, समय पर विद्यालय में स्वयं जाकर प्राचार्यों से मिलकर बातचीत की और अपना परिचय देकर अपने आने का उद्देश्य बताकर शिक्षक शिक्षिकाओं का सहयोग लेकर प्रश्नावली भरवाई।

अवस्था-3 : अध्ययन हेतु डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित उपकरण के माध्यम से अध्ययन हेतु चुने गये न्यादर्श द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति तथा अस्वीकृति हेतु उचित सांख्यिकी विधियों का उपयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया जाता है। परिकल्पना की जाँच करने उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की जायगी।

3.2 न्यादर्श का चयन :-

किसी भी अनुसंधानकर्ता को शोधरूपी भवन बनाने के लिये न्यादर्श रूपी आधारशिला की आवश्यकता होती है। यह आधारशिला जितनी मजबूत होगी शोधकार्य उतना ही मजबूत होगा। आधुनिक युग में बहुतांश अनुसंधान प्रति चयन रीति एवं न्यादर्श रीति द्वारा किये जाते हैं। सांख्यिकीय विधि का विश्वास है कि किसी क्षेत्र में वैज्ञानिक ढंग से चुनी गई न्यादर्श इकाइयों में वे सभी विश्वसनीय पाई जाती हैं।

करलिंगर के अनुसार :-

"प्रतिदर्श जनसंख्या या लोक में से लिया गया कोई भाग होता है, जो जनसंख्या या लोक के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है।"

गुड्स एवं हाह के अनुसार :-

"एक प्रतिदर्श जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, किसी विशाल समूह का छोटा प्रतिनिधि है।"

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन यादच्छिक विधि से किया गया है। गुजरात राज्य के दाहोद जिले के फतेपुरा ब्लाक के 14 शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में से कक्षा सातवीं में अध्ययनरत अनु. जनजाति के कुल 279 विद्यार्थियों को लिया गया है। जिसमें 169 छात्र तथा 110 छात्रायें हैं।

	छात्र		छात्राएं		योग
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
ग्रामीण	169	60.57	110	39.42	279

3.3 शोध में प्रयुक्त चर :-

शैक्षिक शोध में चर का काफी महत्वपूर्ण स्थान होता है। चर से हमारा तात्पर्य है, कि जिसका मान परिवर्तित होता रहता है।

करलिंगर के शब्दों में :–

"चर एक ऐसा गुण होता है, कि जिसकी अनेक मात्रायें हो सकती हैं।"

गैरटे के शब्दों में :–

"चर ऐसी विशेषतायें तथा गुण होते हैं जिसमें मात्रात्मक विभिन्नतायें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है, तथा जिनमें किसी एक आयाम पर परिवर्तन होते रहते हैं।

चर मुख्यतः दो प्रकार के होते है :–

1. **स्वतंत्र चर :–**

साधारणतः प्रयोगकर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है, और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण रहता है उसे स्वतंत्र चर कहते हैं।

2. **आश्रित चर :–**

स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तन होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है उसे आश्रित चर कहते हैं।

शोध में प्रयुक्त चरों का विवरण :–

1. **स्वतंत्र चर –**

पारिवारिक वातावरण :–

पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य माता पिता का बच्चों के प्रति व्यवहार से है।

शैक्षिक उपस्थिति :–

उपस्थिति का आशय वर्ष में विद्यार्थी द्वारा विद्यालय में उपस्थित दिनों की संख्या से है।

2. **आश्रित चर :–**

शैक्षिक उपलब्धि :–

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मुख्य उद्देश्य छात्रों की शैक्षिक उद्देश्य का मापन है।

3.4 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

शोधकर्ता ने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया है। लघु शोध प्रबंध का कार्य करते समय वैज्ञानिक विधि से नवीन प्रदत्त को संकलित करने हेतु कुछ मानकीकृत उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन बहुत महत्वपूर्ण है।

पारिवारिक वातावरण परिसूची :–

लघुशोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा छात्र–छात्राओं का पारिवारिक वातावरण ज्ञात करने हेतु डॉ. करूणा शंकर मिश्र की पारिवारिक वातावरण परिसूची का उपयोग किया है। डॉ. करूणा शंकर

मिश्र द्वारा इसका निर्माण 1989 ई. में किया गया। परिसूची में कुल 100 प्रश्न हैं। ये सब प्रश्न घर में बच्चों के प्रति माता–पिता के व्यवहार से संबंधित है।

जिसके घटक निम्नांकित हैं :–

1. **नियंत्रण (Control)** :–

नियंत्रण यह दर्शाता है कि अभिभावक अनुशासन बनाये रखने के लिये अपने बच्चों पर निरंकुश वातावरण में जो बंधन लादते हैं वह इसके अन्तर्गत आता है।

2. **संरक्षण (Protectiveness)** :–

यह दर्शाता है कि स्वतंत्र व्यवहार का प्रतिबंधन एवं शिशु संबंधी देखभाल का विस्तार इसके अन्तर्गत आता है।

3. **दंड (Punishment)** :–

अयोग्य व्यवहार की उपस्थिति को टालने के लिए शारीरिक एवं प्रभावात्मक दंड इसके अंतर्गत आता है।

4. **अनुपालन (Conformity)** :–

अभिभावक द्वारा दिया गया दिशा दर्शन आज्ञा जो बालक द्वारा पूरा करने की आशा करते हैं और साथी वो इसके अन्तर्गत अभिभावक की इच्छा एवं आशा जो वह बालक से पूरी करने की उसकी मांग होती है।

5. **सामाजिक विलगन (Social Isolation)** :–

इसके अन्तर्गत प्रियजन या पारिवारिक सदस्य से विलगन होने से उसका बालक पर नकारात्मक प्रभाव।

6. **पुरस्कार (Reward)** :–

अपेक्षित व्यवहार की संभावना को बढ़ाने और उसको बल देने के लिए जो मौलिक एवं सांकेतिक पुरस्कार दिये जाते हैं वह उसके अन्तर्गत आता है।

7. **विशेषाधिकार से वंचित करना (Deprivation)** :–

प्रेम आदर एवं अभिभावकों से देखभाल करने के विशेष अधिकार से वंचित करके बालकों के वर्तन को नियंत्रण में लाना यह इसके अन्तर्गत आता है।

8. **पालन पोषण (Nurturance)** :-

अभिभावकों का अपने बच्चों से संलग्नता का अस्तित्व इसके अन्तर्गत आता है।

9. **नामंजूरी (Rejection)** :–

प्रतिबंधित प्रेम जो यह स्वीकृत करता है कि बालक को एक व्यक्ति होने के नाते अधिकार

नहीं है, उसको अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अधिकार नहीं है, उसको स्वतंत्र बनने का अधिकार नही है, इसके अन्तर्गत आता है।

10. उन्मुक्तता (Permissiveness) :–

बालक को अपने मतों को स्वतंत्रता से व्यक्त करने का मौका देना और अपनी इच्छा के अनुसार पालकों के बिना रोक टोक अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने का मौका देना।

11. शैक्षिक उपलब्धि :–

विले और एन्ड्रूज (1955) के अनुसार छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मुख्य उद्देश्य छात्रों की शैक्षिक उद्देश्य का मापन है। जो उन्होंने विद्यालय में अर्जित किया है। सामान्यतया शैक्षिक उपलब्धि को परीक्षा में प्राप्त अंकों से मापा जाता है। इस अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से आशय है कक्षा सातवीं की द्वितीय परीक्षा में प्राप्त अंकों से है।

उपस्थिति :–

उपस्थिति का आशय वर्ष में विद्यार्थी द्वारा विद्यालय में उपस्थित दिनों की संख्या से है। इस अध्याय में उपस्थित से आशय कक्षा सातवीं में विद्यार्थी कितने दिन विद्यालय आया से लिया गया है।

लिंग :– लिंग दो समूहों में विभक्त किया गया है :–

छात्रायें – 1

छात्र – 2

3.5 प्रदत्तों का संकलन :–

लघु शोध प्रबंध में शोधकर्ता ने शोध से संबंधित आंकड़ों का संकलन करने के लिए गुजरात राज्य के दाहोद जिले के फतेपुरा ब्लाक के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के अनु. जनजाति बच्चों को लिया गया है। संबंधित प्रदत्त संकलन के लिए कक्षा सातवीं के अनु. जनजाति के छात्र छात्राओं को बैठाकर आवश्यक जानकारी दी गयी। उसके बाद पारिवारिक वातावरण परिसूची को समझाया गया और उसमें चाही गई जानकारी को भरने के लिए कहा गया। परिसूची में कठिन प्रश्न समझ में नहीं आते थे, उनको एक एक करके समझाया गया, जिससे सही जानकारी प्राप्त हो सके।

3.6 प्रस्तुत लघुशोध उपकरण के अंकन की विधि :–

लघु शोध कार्य के लिये शोधकर्ता ने डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण सूची का उपयोग किया गया है। इसमें 100 कथन हैं, वह 10 घटकों में दिये गये हैं। सभी कथन माता–पिता के बच्चों के प्रति व्यवहार के दिये गये हैं। प्रत्येक कथन पांच बिन्दु अधिकतर, प्रायः कभी–कभी, बहुतकम, कभी नहीं पर अंकित है। प्रत्येक अधिकतर कथन के लिए 4 अंक, प्रायः के लिए 3 अंक, कभी–कभी के लिए 2 अंक, बहुतकम के लिए 1 अंक तथा कभी नहीं के लिए 0 अंक

दिये गये हैं।

स्कोरिंग के निर्देश :-

इस परिसूची का स्कोरिंग निर्देशक की सलाह के अनुसार 279 प्रदत्तों का स्कोरिंग किया गया।

सोपान : 1 सबसे पहले उपकरण के नियंत्रण के घटक 10 कथन का स्कोरिंग किया गया और इन सबको मिलाकर योग किया। इस प्रकार 10 घटकों का भिन्न भिन्न स्कोरिंग किया गया।

सोपान : 2 सबका स्कोरिंग हो जाने के बाद लिंग के आधार पर भिन्न किया जिसमें 1 स्थान पर छात्राओं और 2 स्थान पर छात्रों को रखा।

सोपान : 3 उसके बाद छात्र एवं छात्राओं के ग्रुप का मध्यमान प्रमाणित विघलन और प्रसरण विश्लेषण निकाला इस तरह सार्थकता स्तर का मापन किया।

सोपान : 4 छात्र एवं छात्राओं की उपस्थिति के बारे में उपलब्धि जांचने के लिए 790 और 290 दोनों ग्रुप की उपस्थिति को लेकर 'टी' मान निकाला गया और सार्थकता स्तर ज्ञात किया।

3.7 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ :-

शोध समस्या से सम्बन्धित संकलित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरान्त उनसे उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

अध्ययनरत् बच्चों की पारिवारिक स्थिति आदर्श बनाने के लिये सर्वप्रथम 100 कथनों का कुल योग प्राप्त किया गया। शोधकार्य के विवेचनात्मक अध्ययन के लिये सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। जिससे निष्कर्षों तथा परिणामों को विश्वसनीयता एवं वैध रूप में प्रस्तुत किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में प्रसरण विश्लेषण 'टी' मान परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।